International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 05, May 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पेशवा माधवराव प्रथम एवं मराठा साम्राज्य

जसमेर सिंह
पीएच०डी० शोधार्थी (इतिहास)
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर (म०प्र०)

पानीपत में हुई मराठा साम्राज्य की अवनति और साथ ही पेशवा बाला बाजीराव की मृत्यु से महाराष्ट्र में शोक छा गया था। पानीपत के युद्ध में जहां एक ओर भारी जन-धन की हानि हुई थी तो दूसरी और मराठा प्रतिष्ठा पर भी आंच आई । मराठा साम्राज्य पर आए इस संकट को मराठा शत्रुओं ने एक उपयुक्त अवसर के रूप में देखा।[1] पेशवा बालाजी बाजीराव की मृत्यु के बाद उनके पुत्र माधव राव को पेशवा के वस्त्र प्रदान किए ।[2] रघुनाथ राव को पेशवा का परामर्शदाता नियुक्त किया गया। पेशवा माधव राव का कार्यकाल 1761 से 1772 ई० तक रहा। जब वह पेशवा पद पर प्रतिष्ठित हुए तो उनकी आयु केवल 17 वर्ष थी।

वे अल्पव्यस्क होने के बावजूद अद्भुत दूरदर्शिता रखते थे। उनकी कुशल राजव्यवस्था व संगठन क्षमता के कारण ही पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठें अपनी खोयी शक्ति एवं प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने में सफल रहे।[3] ग्यारह वर्षों के अल्पकालीन शासनवधि में आरंभिक 2 वर्ष गृह कलह व अंतिम वर्ष क्षय रोग पीड़ा से गुजर जाने के बावजूद उन्होने न केवल उत्तम शासन प्रबंध स्थापित किया बल्कि अपनी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 05, May 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दूरदर्शिता से योग्य सरदारों को एकजुट कर उनके सहयोग से मराठा साम्राज्य को सर्वोच्च शिखर तक पहुँचा दिया था।

पेशवा के चाचा रघुनाथराव पेशवाई गद्दी की तीव्र इच्छा रखते थे, जोकि अल्पव्यस्क पेशवा की नियुक्ति के बाद अधूरी ही रह गई थी। उनको पेशवा का संरक्षक बनाया गया, जिससे वह कुद्ध होकर हैदराबाद के निजाम को पेशवा के विरुद्ध भड़काने लगा। अल्पव्यस्क होने के बावजूद माधवराव में स्वाभाविक दूरदर्शिता थी और वे विवेक संपन्न थे। उन्होने रघुनाथ राव को इस बात के लिए राजी कर लिया कि भविष्य में उनकी सलाह के अनुसार ही कार्य होगा। परन्तु रघुनाथ राव स्वयं पेशवा, पद पर आसीन होना चाहता था इसलिए उसने पेशवा के सामने अनुचित मांगे रखी। इस संदर्भ में इतिहासकार गोविन्द सखाराम सरदेसाई ने लिखा है कि "एक मास तक अनिश्चित रहने के बाद रघुनाथराव ने यह स्पष्ट मांग रखी कि पांच महत्वशाली गढ़ों सहित उसको 10 लाख वार्षिक आय की अलग जागीर दी जाए। पेशवा माधवराव इस प्रकार की प्रतिदन्द्वी सत्ता को सहन करने के लिए कदापि तैयार न था। अत: उसने दृढ़ता के साथ इस माँग का विरोध किया।"[4]

रघुनाथराव के मनोनुकूल मांगे पेशवा द्वारा पूरी न किए जाने पर उसने अपनी निजी सेना व निजाम की सहायता से पेशवा के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। 7 नवंबर 1762 ई० को पुणे से 30 मील दूर घोड़ नदी के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 05, May 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किनारे युद्ध हुआ परन्तु कोई निर्णय न हो पाया। पेशवा वहां से सेना हटाकर भीमा नदी के किनारे आलेगांव चला गया। रघुनाथ राव ने पेशवा का पीछा करते हुए 12 नवंबर को अचानक पेशवा पर आक्रमण कर दिया जिसमे पेशवा की पराजय हुई।[5] इस गृह युद्ध को ओर अधिक समय तक न लड़ने और राज्य को विभाजित होने से बचाने के लिए पेशवा माधव राव ने रघुनाथ राव के सामने आत्म समर्पण कर दिया।[6] रघुनाथ राव ने यह प्रदर्शित किया कि उसे पद या सत्ता का मोह नहीं है । परन्तु उसने गुप्त साजिश से पेशवा व उसकी माता को नजरबंद कर दिया। रघुनाथ राव ने समस्त अनुभवी तथा पेशवा के विश्वसनीय कर्मचारियों को पद से हटाकर अपने लोगों को नियुक्त कर दिया। रघुनाथ राव के अत्याचारों से पीड़ित अनेक प्रमुख मराठा सरदार निजाम के साथ मिल गए। निजाम के चतुर कूटनीतिज्ञ दीवान विट्ठल सुंदर ने जब देखा कि पानीपत की पराजय तथा उसके उपरांत गृहकलह के कारण मराठा राज्य निर्बल हो गया है तो उसने निजाम को पुणे पर आक्रमण करने का सुझाव दिया। एक विशाल सेना के साथ निजाम पुणे की ओर बढ़ा।[7] इस विपत्ति के समय पेशवा दरबार के सभी दल आपसी भेदभाव भूला कर शत्रु का मुकाबला करने को तैयार हो गए। रघुनाथ राव व सखाराम बापू ने भी पेशवा को पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। इस संकट के समय पेशवा माधव राव ने अपनी सारी बुद्धि व शक्ति का प्रयोग किया जिससे कि शत्रु से देश को बचाया जा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 05, May 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सका। दोनों प्रतिद्वन्दियों ने एक दूसरे के प्रदेश में लूटपाट की।[8] राक्षसभुवन नामक स्थान पर दोनों सेनाओं में जबरदस्त युद्ध हुआ जिसमें निजाम की पराजय हुई।

इस युद्ध में निजाम अली के दीवान विट्ठल सुन्दर सहित कई प्रमुख नेता मारे गए।[9] 25 सितम्बर, 1763ई० को पेशवा व निजाम के मध्य संधि हुई। इस संधि के अनुसार 60 लाख मालगुजारी का वह क्षेत्र जोकि 4 वर्ष पूर्व उद्गिर की लड़ाई में पहले ही मराठा अधिपत्य में था और 22 लाख के मूल्य का नया क्षेत्र भी पेशवा को मिला।[10] कुल मिलाकर पेशवा को 82 लाख के मूल्य का क्षेत्र निजाम से प्राप्त हुआ।

माधवराव की दूरदर्शिता तथा पराक्रम का इस युद्ध में पूरा परिचय मिला तथा मराठा सरदारों में उनकी प्रतिष्ठा काफी बढ़ गई। पानीपत की पराजय के कारण मराठों की खोयी हुई प्रतिष्ठा कुछ हद तक इस विजय से पुनः प्राप्त हो गयी।[11] दो वर्षों से चल रहा गृह कलह समाप्त हो गया तथा पेशवा पूर्ण शक्ति संपन्न होकर शासन संभालने लगे। समस्त शासनाधिकार अपने हाथ में लेकर पेशवा ने योग्य सरदारा को पुनः उपयुक्त पदों पर नियुक्त किया।[12]

पानीपत में मराठों की पराजय के बाद मैसूर में हैदरअली एक विशाल साम्राज्य का स्वप्न देखने लगा। उसने एक बड़ी सेना को एकत्रित कर मराठों के राज्य पर आक्रमण करना प्रारंभ कर दिया।[13] पेशवा माधवराव ने स्वयं मराठा सेना का नेतृत्व कर हैदर अली पर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 05, May 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तीन बार प्रत्याक्रमण किया। हैदरअली को भारी क्षति उठा कर पराजित होना पड़ा। हैदरअली ने शीघ्र संधि वार्ता शुरू की। इस शर्त पर संधि हुई कि उसे घोरपडे से छीने हुए जिले 'लौटाने के साथ पेशवा को 24 लाख रुपये देने होंगे।[14] अपने समर्थ गुप्तचरों से जानोजी के राजद्रोहात्मक पत्राचार की जानकारी माधवराव को मिल गई। तदुपरांत उसने निजाम के साथ जानोजी भोंसले के विरुद्ध कुछ समझौता तय किया।[15] दोनों की संयुक्त सेनाएं बरार पहुँची और जानोजी भोंसले को धोखेबाजी के दण्ड स्वरूप में दी गई जागीर में से तीन चौथाई लौटाने को बाध्य किया गया।

इस तरह लौटाये गए 24 लाख में हैदरअली के विरुद्ध माधवराव को सहायता देने के गुप्त वादों के बदले निजाम अली को 15 लाख दिए गए।[16] इस प्रकार पेशवा माधवराव ने अपने विश्वासघाती सरदार जनोजी भोंसले के मूल्य पर निजाम को शांत किया। जनोजी भोंसले ने भी भावी अभियानों में पेशवा की आज्ञानुरूप कार्य करने का वचन दिया। वापस लौटते समय पेशवा माधव राव के निजाम के साथ एक मैत्रीपूर्ण सम्मेलन किया। निजाम पेशवा की मित्रता एवं विचारों से बहुत प्रभावित हुआ। इस मित्रता को स्थापित करने में पेशवा ने जिस कूटनीति का प्रयोग किया वह प्रशंसनीय थी।[17] इस स्पष्ट तथा निष्कपट कूटनीति के नए परिवर्तनों के बहुत से उदाहरण पेशवा माधव राव के अल्पजीवन में देखे जा सकते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 05, May 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

18वीं शताब्दी के छठे दशक के मध्य भारत में मराठे, अंग्रेज, निजाम तथा हैदरअली ये चार प्रमुख शक्तियां थी जो कि दक्षिण भारतीय प्रायद्वीप पर अपना अधिपत्य स्थापित करने के लिए संघर्षरत थी। इस संघर्ष में वे एक दूसरे से मैत्री स्थापित करके अपने विरोधियों को पराजित करने के लिए प्रयत्नशील थी। पेशवा माधव राव अंग्रेजों के उद्देश्य से वाकिफ था। वह धीरे-धीरे इनका विरोध करने लगा। वह चाहता था कि उत्तर में अंग्रेजों के आक्रमण की तरफ ध्यान देने से पहले हैदरअली को समाप्त कर दें।[18]

इसी बीच हैदरअली ने भी कौशलपूर्ण झड़पो में अंग्रेजो को अपने साथ एवं मराठों के विरुद्ध रक्षात्मक संधि करने को बाध्य कर दिया था। अंग्रेजो के साथ संधि करके अपने को सुरक्षित समझकर उसने पेशवा के विरुद्ध लड़ाई शुरू कर दी किंतु अंग्रेजों की सहायता नहीं मिली और हैदरअली को कई बार बुरी तरह पराजित होना पड़ा। अंत में उसे कोलार, बंगलौर, उसकोटा, दो अन्य नगर और सीरा एवं 14 लाख रुपये सालाना मराठो को देने का वचन देना पड़ा।[19] हैदरअली के दबाने के बाद पेशवा को एक खतरा अंग्रेजों की ओर से था। अंग्रेजो ने मद्रास और बंगाल में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था और वे अब से बम्बई में भी अपने पैर जमाना चाहते थे। 25 जनवरी 1765ई० को अंग्रेजों ने मालवन के दुर्ग पर कब्जा कर लिया जोकि कोल्हापुर के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 05, May 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

छत्रपति के अधीन था। इससे महाराष्ट्र में इस बाहरी शक्ति के विषय में चिन्ता होने लगी। पेशवा माधव राव इस विषय में चौकन्ना रहा ।[20]

पानीपत की भयंकर और निर्णयामक लड़ाई के कुछ समय बाद तक अपने पारिवारिक विवादों एवं संघर्षों में व्यस्त रहने तथा नर्मदा के दक्षिण की तरफ के युद्धों के कारण मराठो को अवसर ही नही मिला कि वे हिन्दुस्तान की राजनीति में हस्तक्षेप करते ।[21] दिल्ली, आगरा, दोआब, बुंदेलखंड, मालवा आदि स्थानों के छोटे-छोटे शासक मराठा सता का पूरी तरह से अंत करने के प्रयत्न में लगे हुए थे। माधवराव पेशवा ने उत्तर भारत के अपने खोये हुए राज्य पर पुनः सत्ता स्थापित करने का पुरजोर प्रयत्न आरंभ किया। जयपुर के राजा माधवसिंह को मल्हार राव होल्कर के द्वारा परास्त करवा कर राजपूतों पर मराठों की धाक पुनः जमायी गयी और उससे 10 लाख रुपये कर के रूप में वसूल किया। जो कि इन पर बकाया था।[22] तदुपरांत उन्होंने जाट देश पर आक्रमण किया। जाट वीरतापूर्वक लड़े किंतु भरतपुर के समीप पराजित हुए। मराठों द्वारा जाट देश को रौंद डाला गया और अंततः जाटों ने बकाया के रूप मे 65 लाख रूपया देना मन्जूर किया। जिसमें दस लाख नकद व बाकि रकम किश्तों में अदा करने का वादा किया।

आरम्भ से ही मराठों का क्रोध खासकर उद्धत अफगानों पठानों और रोहिल्लों के लिए सिंचित था। पानीपत का पुरोधा नजीबुदौला अपनी जान बचाने के लिए थर-थर कांपने लगा। 1764ई० से जब

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 05, May 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अंग्रेजो ने बक्सर की लड़ाई जीती थी तो मुगल सम्राट शाहआलम अंग्रेजों के संरक्षण में इलाहाबाद के समीप रहने लगा था। नजीबुद्दौला दिल्ली में सम्राट की अनुपस्थिति में काम चला रहा था। विजयी मराठा सेना के पहुंचने की सूचना ने ही उसे शांति-शर्तों की प्रार्थना करने को बाध्य कर दिया। मराठों ने रोहिल्लो को गंगा पार खदेड़ कर इटावा के किले पर कब्जा कर लिया।[23] इसके बाद 1771 ई० मे विसाजी कृष्ण और विशाल मराठा सेना के संरक्षण में मुगल सम्राट को दिल्ली लाया गया । महादजी शिन्दे के नेतृत्व में एक विशाल सेना नजीबुदौला के पुत्र जावीत खां की जागीर पर टूट पड़ी। रुहेलो का साहस टूट गया और उनकी सर्वाधिक शक्तिशाली किलेबंदियां और दुर्ग भी एक मराठा घुड़सवार को देख कर आत्मसमर्पण करने लगे।[24]

पेशवा माधव राव ने राज्य को शत्रुओं से ही न बचाया बल्कि उसमें आवश्यक सुधार भी किए। अपने सुधारों के मामले में सबसे पहले उसने बेगारी प्रथा को समाप्त किया। जिसके अनुसार ग्रामीणों को मजबूरन जागीरदारों व उच्च अधिकारियों के निशुल्क कार्य करने पड़ते थे। माधव राव ने बेगार निषेध आदेश को सख्ती से लागू किया ।[25]

सेना व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए के सैन्य सामग्री के कारखाने लगाए। बागाडकोट में बारूद[26] और पूना में तोप का कारखाना खोला गया।[27] जुन्नार प्रांत के अंबेगांव में तोप के गोले बनाने की फैक्ट्री लगाई गई।[28]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 05, May 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष :

अवस्था बावजूद ऐसे कुशल निर्णय एवं व्यवस्थित प्रशासन संचालन किया जोकि बहुत ही आश्चर्यजनक था । साम्राज्य में आवश्यक सुधार भी किए और जन कल्याणकारी राजस्व व्यवस्था स्थापित की।

मराठो ने पानीपत में जो कुछ खोया था उसे सचमुच माधवराव ने फिर से हासिल कर लिया था। रूहेलो और पठानों की घोर पराजय के उपरांत सम्पूर्ण भारत पर हिन्दू आधिपत्य के मुस्लिम प्रतिरोध के चिन्ह भी दूर हो चुके थे। पेशवा माधवराव की सुझबूझ दूरदर्शिता तथा संगठन क्षमता के कारण मराठा साम्राज्य अपने सर्वोच्च विस्तार तक पहुंच गया । यद्यपि माधवराव सैनिक गुणों की दृष्टि से एक महान योद्धा था परन्तु एक शासक की दृष्टि से उसका चरित्र जितना उज्ज्वल प्रशंसनीय तथा श्रद्धेय है। पेशवा माधवराव के समय मराठा साम्राज्य का वृक्ष दूर-दूर तक प्रसारित हो गया था। मराठा साम्राज्य के लिए पानीपत के मैदान की गम्भीर पराजय भी उतनी घातक सिद्ध नही हुई थी जितनी की महाराष्ट्र के इस योग्य शासक की अकाल मृत्यु से मराठा राज्य की नींव तक हिल उठी थी।

संदर्भ :

---

1 राजाराम व्यंक्टेश नंदकर्णि, मराठा साम्राज्य का उदय और अस्त, पूणा, 1962 पृ॰ 199

2 शंकर नाथ जोशी, भाऊ साहेबांची बखर, पुणे, 1959

3 राजा राम व्यंक्टेश नंदकर्णि, उपर्युक्त, पृ॰ 206

4 गोविंद सखाराम सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास, भाग-II, आगरा, 1972, पृ० 494
5 अनिल चंद्र बनर्जी, पेशवा माधव राव-I, कलकत्ता, 1943, पृ० 20-21
6 स्टेवर्ट गोर्डन, द कैम्ब्रीज हिस्ट्री ऑफ इंडिया-II, (द मराठाज 1600-1818), दिल्ली, 1998, पृ० 155
7 राजाराम व्यंक्टेश नंदकर्णि, उपर्युक्त, पृ० 201
8 गोविंद सखाराम सरदेसाई, उपर्युक्त, पृ० 499
9 कैप्टन रावबहादुर गणेश चिमणाजी वाड, सलैक्शन फरोम सतारा राजा एंड पेशवा IX, पेशवा माधवराव I, बम्बई 1911, पृ० 10
10 गोविंद सखाराम सरदेसाई, मराठी रियासत मध्य विभाग IV, पृ० 60
11 जेम्स ग्रांट डफ, मराठों का इतिहास (हिन्दी अनुवाद कमलाकर तिवारी) इलाहाबाद, 1965, पृ० 407
12 गोविंद सखाराम सरदेसाई, मराठी रियासत, उपर्युक्त, पृ० 7
13 नरेन्द्रा कृष्णा सिन्हा, हैदर अली, कलकत्ता, पृ० 46
14 वही, पृ० 51-52
15 श्री निवास बालाजी हर्डिकर, नाना साहब पेशवा, दिल्ली, 1969, पृ० 8
16 नरेन्द्र कृष्णा सिन्हा, उपर्युक्त, पृ० 54
17 प्रताप सिंह, आधुनिक भारत (1756-1858), दिल्ली, 200, पृ० 46
18 वही, पृ० 48
19 बॉम्बे पॉलिटिकल डिपार्टमेंट डायरी, भाग-8, पृ० 54
20 डॉ० मथुरा लाल शर्मा, मराठों का संक्षिप्त इतिहास, भोपाल, 1973, पृ० 323
21 जेम्स ग्रांट डफ, उपर्युक्त, पृ० 436
22 राजाराम व्यंक्टेश नंदकर्णि, उपर्युक्त, पृ० 204
23 जेम्स ग्रांट डफ, उपर्युक्त, पृ० 439
24 जदूनाथ सरकार, फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर, भाग-II कलकत्ता, 1934, पृ० 554-55
25 जेम्स ग्रांट डफ, उपर्युक्त, पृ० 430
26 कैप्टन राय बहादुर गणेश चिमणाजी वाड, सलैक्शन फरोम सतारा राजा एंड पेशवा जयरी IX, पेशवा माधवराज-I, भाग-II, बम्बई 1911, पृ० 332
27 वही, पृ० 335
28 वही, पृ० 332